International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 425-428

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 425-248
www.allresearchjournal.com
Received: 15-10-2014
Accepted: 22-11-2015

डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.)
महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

Correspondence:
डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.)
महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

मीडिया में नारी अस्मिता

डॉ. माधवी शर्मा

मीडिया संचार माध्यम हैं जिसका अभिप्राय है दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला। संचार माध्यम ही संप्रेषक और श्रोता दोनों को परस्पर जोड़ते हैं। संचार माध्यम के मुख्य कार्य सूचना संग्रह एवं प्रसार सूचना विश्लेषण, सामाजिक ज्ञान एवं मूल्य का संप्रेषण तथा लोगों का मनोरंजन करना । संचार माध्यम का प्रभाव समाज में अनादिकाल से ही है। चाहे संचार माध्यम प्राचीन रहे हो या आधुनिक दोनों ही समाज व राष्ट्र के विकास प्रक्रिया से जुड़े हैं। प्रसिद्ध संचारवेत्ता डेनिस मैक्वेल ने संचार को परिभाषित करते हुए लिखा है ''एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों का आदान–प्रदान ही संचार है।'' डॉ. मरी ने लिखा है ''संचार सामाजिक उपकरण का सामंजस्य है''।

इस प्रकार संचार समाज का मुख्य केन्द्र होता है, यह संचार प्रक्रिया इसी समाज में घटित होती है। संचार की प्रक्रिया किसी दायरे में बंधी नहीं होती। सूचनात्मक, प्रेरणात्मक, शिक्षात्मक व मनोरंजनात्मक ये संचार के लक्ष्य है। ये संचार माध्यम समाज की भीतरी की प्रक्रियाओं को ही उभारकर जन सामान्य तक पहुंचाती है। आज के संसार में संचार व सूचना प्रणाली की केन्द्रीय भूमिका है। आज हम कम्प्यूटर के की बोर्ड के बटन दबाकर तथा माउस को क्लिक करके इंटरनेट के माध्यम से जुडकर समाचार प्राप्त कर सकते हैं यही कारण है कि वर्तमान में मीडिया व जनसंचार माध्यमों का सर्वाधिक महत्व हैं।

मीडिया के माध्यम से हमस एक दूसरे के विचारों से अवगत होते हुए एक दूसरे से जुड गये हैं। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से सारा विश्व एक गांव में बदल गया है। रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेटव इंटरनेट मीडिया के ही अवयव हैं। ऐसा माना जाता है कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है। आज का युग मीडिया का युग है। मीडिया की भूमिका समाज के लिये महत्वपूर्ण है। मीडिया मात्र सूचना के प्रसारण का ही कार्य नहीं करता अपितु जन समुदाय में व्याप्त मुद्दों पर एक राय कायम करने में भी सहयोगी रहता है। ग्राम के छोटे स्तर से निकलकर मीडिया आज वैश्विक रथ पर सवार है। देश के विकास में मीडिया का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है।

मीडिया स्त्रियों के विकृत स्वरूप को प्रदर्शित करने का लाभ बडे स्तर पर कर रहा है। स्त्री मीडिया के लिये एक सैक्स प्रोजेक्ट का काम कर रही है। मीडिया स्त्री की देह का व्यापार कर रहा है। परिवर्तित दौर में मीडिया ने अपने स्वरूप को भी बदला है।

नारी जगत्–जननी आदि शक्ति स्वरूपा है। समुत्कर्ष और निःश्रेयस के लिए आधारभूत श्री, ज्ञान तथा शौर्य की अधिष्ठात्री नारी रूप में प्रगट देवी है। वेदों में नारी के सम्मान के विषय में कहा हैं –

अनुप्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु सम्मनाः।
जाया पत्ये मतुमतीं वाचं यददु शान्तिवाम्।।

स्त्री के बिना पुरूष का कोई अस्तित्व नहीं है। बृहदारण्यक उपनिषद में इस तत्व को बहुत सुन्दर रूप में वर्णित किया है– ''आरम्भ में पुरूषाकार आत्मा ही थी। उसने भलीभांति अवलोकन कर आत्मा से भिन्न कोई दूसरा व्यक्त पदार्थ नहीं देखा। निश्चयपूर्वक उस अकेले ने रमण नहीं किया। इस कारण आज भी एकाकी पुरूष अकेले रमण नहीं करता । उस पुरूष ने दूसरे साथी को चाहा .... उसने इसी आत्मा को दो रूपों में परिवर्तित किया। उस समय स्त्री की स्रष्टि हुई।

आत्मैवेदमग्र औषत्पुरूषविधः। सोऽनुवीक्ष्य नाऽन्यदात्मनोऽपष्यत्।.....
सोऽनुवीक्ष्य नाऽन्यदात्मनोऽपनष्यत्। ..... स वै नैव रेमे। तस्मादेकाकी
न रमते स द्वितीयमैच्छत्। ..... स इममेवाऽममानंद्वे धाडपातमत्,
ततः पतिष्च पत्नी चामवताम्।

डा. वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में ''स्त्री और पुरूष दोनों नदी के दो तटों की भांति सहयुक्त हैं। दोनों के बीच में जीवन की धारा प्रवाहित होती है। वैदिक साहित्य में स्त्री और पुरूष की उपमा पृथ्वी और द्युलोक से दी गयी है। जैसे शुक्ति के दो दलों के बीच मोती की स्थिति होती है, ऐसे ही स्त्री और पुरूष इन दोनों के बीच संतति है। द्यावा– पृथ्वी एक ही संस्थान के परस्पर पूरक हैं। जब आकाशवाणी मेघ वृष्टि के द्वारा पृथिवी को गर्भ धारण कराते हैं, तब वृक्ष –वनस्पतियों का जन्म होता है। यही स्थिति स्त्री–पुरूष की है।''

नारी पति के चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील और विश्व के लिए करूणा संजोने वाली महाकृति है। एक गुणावान नारी कंटिली झाड़ी को भी सुवासित कर देती हैं। नारी देवी स्वरूपा है। महादेवी वर्मा ने कहा है '' नारी केवल एक नारी ही नहीं अपितु वह काव्य और प्रेम की प्रतिमूर्ति है''। पुरूष विजय का भूखा होता है और नारी समर्पण की वास्तव में भारतीय नारी कल्पलता के समान है''।

समाजशास्त्री अफलातून ने कहा है कि ''समाज में नारी का स्थान व महत्व क्या है, वहीं जो पुरूष का है न कम और अधिक। स्त्री और पुरूष दोनों एक रथ के पहिये के समान है यदि एक घटिया या कमजोर हुआ तो समाज का रथ निर्विकार रूप से आगे नहीं बढ़ सकता है। ये दोनों पक्षी के एकडैनों के समान है, यदि एक डेना छोटा या अशक्त रहा तो पक्षी नभ में विचरण नहीं कर सकता''।

नारी कोमल हृदया, दया, क्षमाशीलता, त्याग व सहनशीलता की प्रतिमूर्ति होती है। पर जब इसी देवी स्वरूपा स्त्री का स्वाभिमान आहत होता है, देह पर दाग लगता है तो वह चण्डी का रूप ले लेती है। क्योंकि वह जानती है कि नारी के कोमल स्वरूप के आधार पर उसे दया और सहानुभूति मिल सकती है। लेकिन समाज में पुरूष के समानांतर स्थिति पाने के लिए उसे स्वावलंबी, कठोर व अटल स्तंभ बनना ही होगा। तभी वह अपना वजूद कायम कर सकती है। समाज में नारी है यह कहकर कोई भी उसका स्वाभिमान आहत नहीं कर सकता । आत्मविश्वास नहीं उखाड़ सकता। आज वक्त ने नारी के स्वभाव व चरित्र को बदल दिया है। आज की नारी जागरूक है। नारी के जागरूक होने से उसे अपने को अभिव्यक्त करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ हैं और यह मीडिया की देन है।

विज्ञापनों में स्त्री देह का सहारा लेकर बिक्री बढाई जा रही है। स्त्री के इस स्वरूप से ऐसा लगता है।''सचमुच हिन्दुस्तान नई सदी मे पहुँच गया है। कदाचित् कोई ही ऐसा विज्ञापन हो जिसमें नारी और देह का व्यावसायिक इस्तेमाल न होता हो।'' मीडिया और नारी दोनो के बीच की यह स्थिति बुद्धिजीवियों को समाजशास्त्रियों को सोचने के लिए मजबूर करती है कि नारी मीडिया की लोकप्रियता का अस्त्र है या नारी के अधिकारों उसके शोषण को दूर कराने का अस्त्र मीडिया है। नारी की उभरती हुई इस हास्यास्पद स्थिति का विश्लेषण नारी को स्वयं ही करना होगा। नारी को स्वतन्त्रता का पूर्ण अधिकार है कुछ कर गुजरने का जज्बा है। '' यह ऐसा दौर है जहाँ वेडियां भी है और पंख भी उडाने भी है और बंदिशे भी बा हदवजूद और बेहिसाव उडानों के बीच एक लकीर धुंधलाती नजर आती है उसका ध्यान जरूर स्त्री समाज को ही रखना होगा।'' मीडिया में आज जो नारी की बदलती विकृत छवि दृष्टिगोचर हो रही है उससे नारी का नैतिक चारित्रिक पतन हो रहा है जिससे उन्हें मुक्त होने की जरूरत है। ''स्त्री मुक्ति की मेरी परिभाषा उसके मस्तिष्क से जुडी है। मेरी दृष्टि में स्त्री की मुक्ति तभी संभव है, जब वह देह से नही बल्कि मस्तिष्क से पहचानी जाऐगी।

आज विश्व में मीडिया द्वारा यह भली भांति समझा जा रहा है कि पुरूषों व स्त्रियों की योग्यताऐं व क्षमताऐं

बराबर हैं और पुरूषों व स्त्रियों का आचरण स्वभाविक अंतर के स्थान पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक अपेक्षाओं से अधिक निर्धारित होता है। इस बढती जागरूकता के कारण ही पुरूषों और स्त्रियों की भूमिका के बारे में विश्व सोच में बुनियादी परिवर्तन आया है। जब यह काल्पनिक अंतर निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करने के स्थान पर भेदभाव के रूप में सामने आते हैं, तो ये अन्याय का कारण बनते हैं या इनसे भेदभाव पूर्ण दृष्टिकोण या मूल्य उत्पन्न होते हैं। स्त्री पुरूष के दृष्टिकोण सम्बन्धी मतभेद परिवारों में ही नहीं अपितु समाज में विभिन्न संस्थानों में देखे जाते हैं। ये मतभेद स्त्री पुरूष भेदभाव को मजबूत बनाते हैं, और इसे बढावा देते है।इसलिए आवश्यक है कि पूरा समाज पुरूष और स्त्री की इस समानता को समझें और इसके खत्म होने के लिए प्रयास करे। आज अनुभवजन्य असमानताओं पर काबू पाने और अनुचित व्यवहार को मिटाने के लिए सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है। मीडिया ही इस क्रान्ति का सूत्रधार बनकर मानव परिवार में प्रत्येक स्तर, प्रत्येक सदस्य में परिवर्तन लाकर स्त्री पुरूष की इस असमानताओं को समाप्त कर इस भेदभाव के दृष्टिकोण को जडमूल से नष्ट कर रहा है। हमारा समाज मीडिया के समक्ष इस स्त्री पुरूष विषयक भेदभाव को न करने के लिए वचनबद्ध हो रहा है।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद जब हमने नवीन संविधान को अंगीकृत किया जो जन–जन के लिए न्यायपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की प्रतिज्ञा की थी, इन सबमें समानता का अधिकार सर्वोपरि था। इन मूलभूत अधिकारों को हम न्यायपालिका के दायरे में लाए। संविधान के तहत समानता और भेदभाव रहित तथा न्यायपालिका के दायरे में लाए संविधान के तहत समानता और भेदभाव रहित तथा गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार सुनिश्चित किया गया है। अदालतों ने इन अधिकारों की व्याख्या अन्तर्राष्ट्रीय संधियों, प्रतिज्ञा– पत्रों, समझौतों और सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा नागरिक और राजनीतिक तथा आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक अधिकार संबंधी प्रतिज्ञा पत्रों तथा स्त्रियों के खिलाफ सब तरह का भेदभाव संबंधी संधियों में निहित मापदंडो के अनुरूप की है। इस प्रकार कानून मानव तथा बुनियादी अधिकारों का संरक्षक है। महिलाओं की न्यायिक प्रणाली तक पहुंच बढाने के लिए न्यायालयों को जनहित याचिकाओं की सुनवाई की अनुमति दी गई हैं, ताकि कानून के सहारे स्त्रियां अपने प्रति होने वाले अत्याचार से निपटने के लिए न्यायालय की शरण में जा सकें। पत्र–पत्रिकाओं, दूरदर्शन, इंटरनेट के द्वारा महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सचेत किया जा रहा है। समाज में होने वाले महिलाओं के सामाजिक मुद्दो का खुलासा कर सामान्य महिला समुदाय को अपने प्रति होने वाले दुर्व्यवहार को सहन न करने के लिए जगाया जा रहा है। मातृत्व अवकाश, चिकित्सा सुविधा, जबरन गर्भपात, गर्भवस्था के दौरान न बर्खास्तगी के खिलाफ संरक्षण, नवजात शिशु और मां की स्वास्थ रक्षा कन्या भ्रूण हत्या, लडकी के जन्म पर अत्याचार नारी को इन सब अधिकारों के लिए दृष्टांतो के द्वारा जागरूक बनाया जा रहा है।

आज के विकास के दौर में देश के विकास की यात्रा में पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं की भी भागीदारी जरूरी है। आज की प्रत्येक महिला देश के किसी न किसी कार्य में सहयोगी बन रही है और इसका एक मात्र कारण उसका शिक्षा से सुसज्जित होना है। वैसे तो शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। लेकिन पुरूषों की तुलना में स्त्रियों के लिए शिक्षा प्राप्त करना ज्यादा जरूरी है, क्योंकि यदि स्त्री शिक्षित होती है तो वह पूरे समाज को राष्ट्र को शिक्षित करती है। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है कि –

'' एक पुरूष को शिक्षित करने से अधिक उचित एक महिला को शिक्षित करना है, क्योंकि एक महिला के शिक्षित होने का अर्थ पूरे परिवार को शिक्षित करना है'' मीडिया अपने विविध संचार के माध्यम से स्त्रियों को शिक्षित होने के लिए जागरूक कर रहा है। साथ ही साथ समाज को भी शिक्षा के लिए सुविधाऐं उपलब्ध

कराने के लिए प्रेरित कर रहा है। स्त्री शिक्षा की विविध योजनाओं से परिवारों को अवगत करा रहा है।

पूर्ण व सुचारू शिक्षा न मिलने से महिलाऐं बाहरी दुनियां से अनीयज्ञ रहती है। शिक्षा के माध्यम से ज्ञान कौशल, जीवन मूल्य और विविध आयाम को स्त्री स्वतः ही प्राप्त कर लेती है, इन सबसे उसके जीवन में गुणवत्ता आ जाती है। स्त्री बाहर के दायित्व का पूर्णरूपेण निर्वाह कर सकती है अपने बच्चों का पथ प्रदर्शन कर उनके व्यक्तित्व को संवार सकती है। शिक्षित महिलाओं से परिवार का पुरूष प्रभावित होता है और परिणामत बच्चे स्वतः ही प्रभावित होते हैं, और बच्चे राष्ट्र के भावी जीवन के आधार स्तम्भ हैं।

'' वर्तमान सामाजिक ढांचे में महिलाओं पर भारी बोझ है। वे घर चलाती हैं और नई पीढी तैयार करना उनकी खास जिम्मेदारी है। इसके साथ ही वे प्रायः अन्य कामों में भी हाथ बडाती है। अशिक्षित महिला अपने माता–पिता, पति और बच्चों पर निर्भर हो जाती है। वह स्वयं अपने जीवन को बोझ समझने लगती है। शिक्षा स्वाभिमान की भावना जगाती है और कार्यक्षेत्र की सीमा का विस्तार करती है। वह काम कर सकती है, व्यवसाय में उल्लेखनीय स्थान बना सकती है और अपनी प्रतिभा से ख्याति प्राप्त कर सकती हैं, यदि वह घर पर रहना चुनती है तो अपने बच्चों का प्रभावशाली ढंग से पथ–प्रदर्शन कर सकती है, और अपने बच्चों को विभिन्न प्रकार से सहायता करने में और सक्षम हो सकती है''।

आज के नव उदारवादी बाजारवादी संस्कृति के प्रहार से सामाजिक मूल्य तितर– बितर हो गये हैं। रिश्तों की मर्यादा नष्ट प्राय हो गयी है। समाज द्वारा महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधारों को, अत्याचारों को, हिंसा को अनदेखा किया जा रहा हैं जब कोई बडा कांड होता हैं मीडिया द्वारा उसको उजागरू किया जाता है राजनीतिक खेल शुरू होता है। लेकिन दूसरी तरफ नारी की स्वतंत्रता और अधिकारों पर प्रश्न चिन्ह लगने शुरू हो जाते है। नारी के प्रति होने वाले अपराध के लिए नारी को ही जिम्मेदार ठहरा दिया जाता है हिदायतें दी जाने लगती है। कि उसे रात्रि में बाहर नहीं निकलना चाहिए या उसका विवाह जल्दी कर देना चाहिए यह कभी नही कहा जाता है कि पुरूष को अपनी सोच बदलनी चाहिएं जैसे लडके स्वतंत्र तथा निर्भय होकर सडकों पर घूम सकते है। तो लडकियां क्यों नही घूम सकती? जब तक समाज का नजरिया नहीं बदलेगा नारी की शारीरिक संरचना के प्रति आकर्षण नहीं बदलेगा देखने की नजर नही बदलेगी उनके प्रति हिंसात्मक अपराध, यौन हिंसा, बलात्कार कम नहीं होगें इसके लिए मीडिया को गिरते हुए नैतिक मूल्यों को पुनः समाज के हर पुरूष में अंकुरित करना होगा तथा महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए सजग करना तभी समाज भयावहता के पतन रूपी गर्त में जाने से रूक सकता है। केवल कानूनों का सृजनो करने मात्र से कोई निदान नहीं हो सकता ।

आज के भौतिकवादी युग में बाजार वाद शबाब पर है। इस भौतिक वादी युग में हर चीज बिक रही है अतः नारी देह इससे कैसे अछूती रह सकती है। मीडिया के दूरदर्शन, फिल्म, पत्र–पत्रिकाओं, साहित्य, इंटरनेट, सोशल मीडिया के द्वारा इस नारी की आस्मिता को सरे आम बेचा जा रहा है। मीडिया भी वैश्वीकरण की राह पर चलकर हम

मीडिया महिलाओ के उत्थान व उनके अधिकारों के प्रति जागरूक व संघर्षशील बनाने मे महती भूमिका निभा रही है। इसका प्रभाव यह हो रहा है कि महिलाऐं घर की देहरी से निकल कर अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों से मुक्त हो रही है। मीडिया ही वह माध्यम बनता जा रहा है जो कि धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, खेल– कूद वैज्ञानिक स्वास्थ्य आदि समस्त क्षेत्रों में पहुंचा रहा है। महिलाऐं जागरूक होकर अपने हक के आधार पर स्वावलम्बी बन रही है। मीडिया समाज में व्याप्त महिलाओं के प्रति कुरीतियों के प्रति उन्हें जागरूक करने का अथक प्रयास कर रही है। मीडिया महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों, हत्या, बलात्कार, बाल विवाह, देहेज प्रथा, धर्म के आधार पर पनपने वाली प्रथाओं, वेश्यावृति आदि का उजागर कर महिलाओं को मुक्त कराने का प्रयास कर रही है।

मीडिया ने नर और नारी के अन्तर को खत्म कर दिया है। पुरूष और स्त्री दोनों एक दूसरे के महत्व को समझने लगे हैं। परिस्थितियां दोनो को समान बना रही है। नारी हर क्षेत्र में अपना अस्तित्व दिखा रही है। शिक्षा, साहित्य, कला, संगीत, राजनीति, चिकित्सा, व्यापार, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, प्राद्यौगिकी कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो कि उसके प्रवेश से वंचित रहा हो। गांधीजी ने कहा है – ''स्त्री और पुरूष दोनों समान दर्जे के हैं, एक दूसरे की कमी पूरी करने वाले हैं और जहाँ पूरकता है वहाँ कौन किससे मुक्त होगा''।

मीडिया ने नारी की समाज एवं राष्ट्र की भूमिका में उसके अधिकारों व कर्त्तव्यों का ज्ञान कराया है। उसकी प्रकृति को बदला है। नारी पूज्या के स्थान पर अपने साथ समानता का व्यवहार चाहती है। सदियों से नारी को पूजनीया के पद पर स्थापित कर उसे स्वर्णाभूषणों से सजाकर उसे परम्परागत आदर्शों की घुट्टी पिलाकर उसके मस्तिष्क को जड़ बना दिया। लेकिन आज की नारी ने अपने अस्तित्व को पहचान लिया है, इसलिए वह अपने साथ पुरूषों के समान व्यवहार चाहती है। आज वह अपने आपको सामाजिक पटल पर स्थापित करने के लिए व्याकुल है। मूक, लज्जा तथा अपने दबे हुए व्यक्तित्व से बाहर आकर रूढ़िवादिता के बंधनो को तोड़कर समाज को अपने अस्तित्व का आभास करना चाहती है। आज की नारी अपनी पूर्णता की राह पर चल पडी हैं और निरन्तर आगे बढ़ती हुई समाज के नारी विषय भ्रम को ध्वस्त करती हुई अपने आत्मविश्वास की ज्योति से सबको आभासित कर सके।

मीडिया ने आधुनिक जीवन की जटिल परिस्थितियाँ समेटे, समय के साथ परिवर्तित होते हुए मानवीय सम्बन्धों की भयावहता को उजागर कर नारी की अस्मिता की राह बताते हुए अपनी वैविध्यपूर्ण रचनाशीलता के माध्यम से नारी के लिए आकर्षक भव्य और गम्भीर जगत का निर्माण किया है जिसका चमत्कारपूर्ण प्रभाव सारी नारी जाति महसूस कर रही है। मीडिया ने जहाँ एक ओर नारी को सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता की बेड़ियों से मुक्त किया है, वहीं दूसरी ओर उसे उसके अधिकारों का ज्ञान देकर उसे नवोन्मेषी विचार दिए हैं, आवाज दी है, पहचान दी है। आज नारी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक आदि को नए आयाम दे रही हैं। इन सबमें उसे नवीन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, प्रताड़ना झेलनी पड़ रही है। बाहरी चकाचौंध में छिपे अन्दर के रहस्य को वह जान रही है, समस्याओं का वह सामना कर रही है। इन समस्याओं के समाधान मीडिया ने साहित्य, चल–चित्र, पत्र–पत्रिकाओं आदि के द्वारा उनका यथार्थवादी चित्रांकन व विविध दशाओं में समाधान की राह खोली है। पुरूष रचनाकारों ने, बुद्विजीवियों ने नारी को घर की देहरी तक बांध दिया था, देह को पुरूष की वसीयत देह का सैंडविच की तरह उपयोग किया, स्त्री सिर्फ सेक्स का जरिया है, स्त्री मात्र सन्तान की जन्मदात्री ही नहीं है, विचार दिए वहीं बताया कि स्त्री महज एक भावों का पुंज नहीं है, अपितु उसका अपना व्यक्तित्व है, मर्दवादी यौनिकता से परे भी उसका स्वतन्त्र व समग्र व्यक्तित्व है। दर्द से कराहती, विलाप करती, अपने स्व को मिटाने के लिए मजबूर नारी इसके द्वारा अपने अस्तित्व का अन्वेषण कर रही है। अपितु ऊँची बुलन्दियों को छूकर नए आयाम स्थापित कर रही है। यहाँ नारी ने आशातीत प्रगति की है, वहीं आज वह पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रही है जिससे उसकी मान मर्यादा का ह्रास होकर शीलत्व गुण तिरोहित हो रहा है। स्वतंत्रता का स्थान स्वच्छंदता ने ले लिया है। नारी का नगनत्व प्रदर्शन हो रहा है। पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन व फिल्मों में नारी का देह प्रदर्शन हो रहा है, उसकी भूमिका को विद्रूप तरीके से मीडिया के द्वारा पाठक व दर्शकों को परोसा जा रहा है। सामाजिक षडयन्त्रों में नारी का

योगदान, व्यभिचार, यौन शोषण, नग्नता का प्रदर्शन और अश्लील दृश्यों का समाज पर कुत्सित प्रभाव पड रहा है, युवा वर्ग दिग्भ्रमित हो रहा है एवं नग्न नृत्य, वेष विन्यास का अभद्र प्रदर्शन, नारी देह का अश्लील प्रदर्शन द्वारा कुमार्गगामी हो रहा है। इसके परिणाम स्वरूप बलात्कार, दुराचार, यौनशोषण, अश्लील हरकतें व छेड़छाड़ की घटनाऐं हो रही हैं।

नारी के अवमूल्यन के विषय में ऐलीसन जेगर ने कहा है ''दुनियां को मापने और लांघने का पुरूषोचित नजरिया अलग ही रहा है। अरस्तु, कान्ट, हींगल, नीत्शे आदि को स्त्री जाति की बौद्विक और तार्किक क्षमता पर गहरा संदेह था, किन्तु इधर उदारवादी आन्दोलन 1960 में प्रारम्भ हुआ तथा 1970 से 1980 तक अधिकतर नारीवादी आंदोलन स्त्री को पराधीनता की बेडियों से मुक्त कराने के लिए संचालित हुए''।

वैदिककाल में पूज्य और सम्मान की अधिकारिणी रही नारी अक्षुण्य शक्ति का स्वरूप ही नहीं पुरूष की पूरक भी है। उसमें समय के साथ आये परिवर्तन, देहशोषण, दुराचार, अत्याचार के विरूद्व स्वर प्रगति के द्योतक है।

वेदों में कहा गया है ''जो सृष्टिकर्ता की ओर दुर्लभ उपहार है, मां, शक्ति, भक्ति व श्रद्वा की आराध्य है, दुनिया की सबसे बड़ी धरती है। प्रथम प्रणाम की अधिकारी है। मां ममता की अनमोल दास्तान है।

मीडिया समाज का दर्पण है जिसमें समाज अपना अक्श देखकर आत्मावलोकन कर सकता है। प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया मे नारी की सहभागिता प्रशंसनीय है। विगत कुछ वर्षों से मीडिया जिस तरह नारी की अस्मिता को भुना रहा है वह जाने अनजाने समाज को अंतहीन गर्त में धकेल रहा है। धार्मिक, सात्विक समाज का संदेशवाहक मीडिया मार्गदर्शक की राह से भटककर व्यावसायिकता की दौड़ में आ गया है। आज मीडिया का भी व्यवसायीकरण हो गया है। आज विज्ञापन के लिए नारी को एक वस्तु के रूप में प्रदर्शित किया जा रहा है। आई. पी. एल. मैच के दौरान खिलाडी के चौके व छक्के लगाने पर नारी के अंग प्रदर्शन द्वारा खिलाडियों के उत्साह में इजाफा किया जाता है। अप्रत्यक्ष रूप से मीडिया के द्वारा ऐसा प्रदर्शन समाज में विकृत मानसिकता को बताता है जिससे कि समाज में अपराध को बल मिलता है।

प्रायः मीडिया के प्रत्येक विज्ञापन में नारी का देह प्रदर्शन देखने को मिलता है। विज्ञापन में नारी का नग्न प्रदर्शन आकर्षण का नहीं विकषर्ण का संदेश देता है। समाज में होने वाले बलात्कार, यौन शोषण आदि इसके ही परिणाम है।

बाजारवाद का मूल मन्त्र है 'जो दिखता है वो बिकता है' इसलिए नारी को हर विज्ञापन में जोड दिया जाता है। स्त्री के मानवीय सौन्दर्य के समक्ष देह के बाजार द्वारा स्त्री का उपनिवेशीकरण किया जा रहा है।

माना कि नारी सौन्दर्य का प्रतीक है। और सुन्दर दृश्य चित्त को आल्हादित करता है। किन्तु जब सौन्दर्य समस्त सीमाओं को लांघकर सामने लाया जाता है तो दुःस्वरूप का परिचायक बन जाता है। किसी भी देश का समाज का विकास तभी संभव है जब उस देश की नारी का सम्मान हो। आज मीडिया को नारी की भोगवादी छवि के स्थान पर उसके " यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता " की वैदिक कालीन छवि को पुनः स्थापित करने के लिए प्रेरित करना होगा।